

उत्तरायण

पञ्चाङ्गिका
सूक्तसंग्रह

उत्तरायण

2640 I

ASIAN ARCHIVES

290 →
Pauca Kunda
Misthan



नयसाहा॥ उं नै नै नै
कसाधियनयसाहा॥
उवायययुताकधिय
नयसाहा॥ उं ॐ सा नै नै
नाधियनयसाहा॥ ॥

थनयूजा. जाला नाकु।
उं ॐ नै नै नै नै नै
वजहसमहावल४स
वजकधियाजाऊ॥ न
सो ॐ नै नै नै नै नै
कयन. समय. धाला
मन. ऊधम्या॥ ॥ उं
नकाकयपनिसासधि
कवधं॥ ॥ सी दगा

नम. संखलखनहाय
॥ उं नै नै नै नै नै
हा॥ ॥ थनमी का का
काय४यूजा४कात्र४सम
नक॥ उं वूधवायां दुस
वैकदनजीनसूना४दव
नकत्यसना. वृक्षाया ला
कपालासासनादवका
हीसमना साकाकल्यान
वीन४सकत्रऊनयवी
नानाथन४वका र्थनापी
पूजागु. कुरु. गी. कीवीऊ
यं दु४इगनाहदुजागंदु
ऊरु॥ ॥ थन हामः
सी. गी. यनन्या॥ य. कृ. य

हावयुक्ता ॥ धनम्
ग्रीवाय नमः ॥ कंक्षामोलास
मीनाय नमः ॥ हंसाग्निः
वीर्या ॥ ॐ हंसाग्निः
॥ मीनाय नमः ॥ यावा
द्यनया ॥ ॐ अग्रयणपुत्र
वस्त्राय नमः ॥ कृष्णाय
वसनाय नमः ॥ पुत्रस्य नमः
कृष्णाय ॥ ॐ गंगारत्न
खनहाय ॥ ॐ हंसाग्निः
यस्याह ॥ ॥ तादुन
याय ॥ ॐ सर्वपापवीर्य
मायारुम्भी कृष्णहंसा
स्याह ॥ ॥ ॐ काय
काङ्क्षमय ॥ ॐ सर्वपा

पमत्तापय ॥ इहं हंसाह
॥ पिताउयक ॥ ॐ सर्वक
॥ गंगारुम्भी कृष्णहंसा
हा ॥ मन्त्रपितामयाउय
क ॥ ॐ सर्वपापदहनका
लय ॥ इहं हंसाह ॥ ॥
गंगारत्न ॥ लंखकपुत्र
स्य आयकलक्षय ॥ ॥
थनमहादान ॥ अग्रयण
कृष्णहंसाह ॥ ॐ अग्र
यणाय दीपदीप्यावीर्यावी
र्यमहाशाय हंसाह ॥
वाहनाय ॥ दानयक ॥
कीर्त्याह ॥ कृष्णहंसाह
अग्रयणनमः ॥ ॐ कृष्ण

सा साहा॥ ॥थनम्
मिथायन॥थनम्
लाहानम. गालाहाउना
॥उवऊवऊयम् ३॥उं
कुरुमाजीनामिम(ध्वं
कयाहउपीरुव रूम
कमखचरुहऊवाभउ
दकमधुप्रधप्र४सर्वः
वप्रदाकमाजीधप्र४पी
कामववाधप्र४ऊहयवी
कशीनरु४ऊनामकुकंः
माजीनममयाश्रुग्रीवी
हावा॥उं॥हहीमहाह
न.दवनाह.हवीसफः
महीनाहनी४महात्रि

सनीहकाहवसाहा॥ॐ
नमनहानागिआवाहये
उंआ४टकीऊरुं३॥ ॥
थनवऊ सयालथनी
न॥थनकलंगयालख
हाय॥ ॥उंआग्रय
आदीयंदीणावीषमहा
गीयहवकवावाहनाय
दस ऊहसयसखमीनी
॥उंवऊनऊआ॥ॐ॥नम
नसमयाश्रुग्रयवंगय
॥थननीलाऊन४आक
षर्हणायादियूखंआगी
॥ ॥पादाद्यनय॥सा
नवाय॥उंआग्रयवव

५५
स्वायं यावमर्घ्ययुगी
कृष्णहा॥ ॐ अग्नि य नम
स्वाहा॥ ॐ इन्द्रा सनाय न
मस्वाहा॥ ॐ
नमस्वाहा॥ ॐ दधामः
स्वाय नमस्वाहा॥ ॐ स
फविरे नमस्वाहा॥ ॥
युक्ता लास्या नाकु॥ ॥
ॐ अग्नि युक्ता नी कवद
का कवद इन्द्रा सन सुव
धुवर्धु वरु ममदं ४ स
मा दिसर्वस्वधवा नी मः
स्व वीरानवधवी च दी
आम कलधवा वा मया
नी इत्येवमी दयवा वल

पं ४ गी वगा वल न नं ४ म
इन्द्रा खवसा नं ये म्मा क द
दयं ४ कृत्वा नी कवयुक्त
वजी नही मना दं ४ वीरु
न हान नयं नी ही न ह व
हय य व म्मा नी न मा मी ह
॥ ॥ **थ न ऊ ऊ मान**
४ य न ऊ य क॥ आय ४ धू
य ४ म न धा ७॥ ॐ व ऊ स
स्व आ ई रु द स्वाहा॥ ॥
थ न य न स्व ध न॥ य व य
हा युक्ता॥ ॐ ऊ स्वाहा॥ थ
न ऊ ऊ मान॥ की य न न क
ध ल स क स व क॥ ॥ ॥
ॐ यु किं वि व स मा ध म्मा

आसा शुभाहनावीना अ
न्यायापीह दुर्मसमः
हव॥ ॥थन नका

कय ४ यत्र सथुं उग
सइय॥ ॥उमका

अग्निमखवकायन-ऊ
वहलपमानं शुक्रवती
विराव॥ ॥थनस

यायानं ४ यन सयालइ
य॥ ॥उमगियखाहा॥थ

नकृग कयइय॥थन
असादसीइय॥ ॥उं

अदीयखाहा॥ अर्कसी॥

उं वज्र समायवायखाहा
पुहासी॥ ॥उं वज्र अगावा

यखाहा॥ ॥वदीवसी॥ ॥उं

वज्रवाधयखाहा॥ ॥अपा

मार्गीसी॥ ॥उं वज्र कवावा

यखाहा॥ ॥उं वसी॥ ॥उं वज्र

ऊगायखाहा॥ ॥उं इव वसी

उं वज्र सनी ववायखाहा

॥सम्यासी॥ ॥उं वज्र वाधिव

कयखाहा॥ ॥अवगसी॥

उं वज्र ववायखाहा॥ ॥पीवा

गकसी॥ ॥उं वज्र वक्रवीक

यखाहा॥ ॥वक्रन इसी॥ ॥उं

वज्र सधुनयखाहा॥ ॥मधु

सी॥ ॥उं वज्र मसा कयखाहा

॥अससी॥ ॥उं सर्वपायय

समनायखाहा॥ ॥वेकथसी

उं वज्र सह का वा य स्वाहा
॥ **आमजसा** ॥ उं वज्र के स
य स मा वा य स्वाहा ॥ **कदा**
वसी ॥ उं वज्र स व का रु द
य स्वाहा ॥ **गीतासी** ॥ उं व
ज्र ही वा रु क य स्वाहा ॥ **गं**
हीनसी ॥ उं वज्र स धु ना
य स्वाहा ॥ **मदनसी** ॥ उं
वज्र स्र य ही न व ज्ञ य स्वा
हा ॥ **कुग** ॥ उं वज्र २ पू क
य स्वाहा ॥ **दा हा स्वा** ॥ ॥
थन म्र ला द स बी ही इ
या ॥ उं सर्व पा य द ह न
व ज्ञ य ४ सर्व द ह २ स्वा
हा ॥ **दुयू सीय हा कू-र**

भा ४ ॥ उं वज्र य म्र स्वाहा ॥
॥ **आकृ** ॥ उं वज्र व मा
य स्वाहा ॥ **नकु** ॥ उं वज्र
य स म वा य स्वाहा ॥ **माथ**
कु ॥ उं वज्र वी ज्ञ य स्वा हा
स्वानवा ॥ उं वज्र वी ज्ञा रु
वा य स्वाहा ॥ **पू आ** ॥ उं
वज्र स हा व वा य स्वाहा ॥
मासा ॥ उं वज्र सा हा का वा
य स्वाहा ॥ **मान** ॥ उं वज्र क
वा य स्वाहा ॥ **कयगु** ॥ उं व
ज्र रु क म य स्वाहा ॥ **हनी**
॥ उं वज्र म्बर मा वा य स्वा
हा ॥ **पचमास** ॥ उं वज्र क
कु मा वा य स्वाहा ॥ **काल**

उवकुसुमाय स्वाहा ॥ म
 ता उवकुसुमवराजाय स्वा
 हा ॥ माया उमवीथमीधि
 य स्वाहा ॥ ॐ का उमवेक
 सपसमना स्वाहा ॥ च का
 उमवसंयदय स्वाहा ॥
 इ इ का ॥ धित्री उं आमेन
 रुवाव स्वाहा ॥ धूकसी उं
 कीरुवन हाकवय स्वा
 हा ॥ ॥ य न मूवाफ
 न साधन ॥ पूजा ॥ अग्नि
 सीमानवीय ॥ ॥ उं
 वकुसुमवराजाय नमः
 धय २ उं आ इरुट स्वाहा
 ॥ स्वाकउयक ॥ ॥

थनयथमा इति ॥ गंध
 ना इति या ध्यान ॥ ॥
 कनावकिनाचमनं क
 वा लाकरुत्रहनामिं
 वीरुवा ॥ ह्नावाकागोर्य
 हा ग्यददीकमत्रदा
 भायत्रिमधुवाधियनी
 ४वीकनीखान वीरुवी
 पत्रीनामन ४ मधुवाधि
 पकीसमाधि दुययंवी
 लावहनसत्त्वचं वक्र
 कसादीलीवाक ४ ४ पुव
 भावधात्रमी स्वाहनंम
 मयसत्त्व ४ था की वनील
 मीवसमवसीत्यनसह

कीरुनवीरुवा ॥ ॥

थनदीगुयासप्रयंयुज

॥ जाय४धुय४आ४पा४

य४यु४आ४वा४उरु ॥ थ

नरुकीकयइय ॥ ॥

उंनमाश्रुमीकीकायां

इं४काप्रनऊआरुव

यमानंशुक्रवकीविरा

वा ॥ ॥ गखलंख

नहाय ॥ इंआचमन

यमीकसाहा ॥ उंयुर्व

वरुयवीयाकनमूल

मरुइइयाक ॥ ॥

थनवीवाकसाधन

॥ यववृधसप्रयंनयुः

जा ॥ गखलंखनहाय ॥

सूत्रावातथीसं ॥ थल

इय ॥ मूलमंजुनलीवा

कइय ॥ हृदयमरुन ॥

कावीहीइय ॥ थनहा

नाइमीआइमीवीय ॥

थनकलससूलापाम

थीयक ॥ ॥ थन

इंआयु४ ॥ ध्यान ॥ ॥

उंनमादवनायामरुइं

कयन४सूक्रवकी४ऊआ

रुलनवीकावा ॥ आचम

नयमीकसाहा ॥ युर्वरु

वरुयवीयाकनमूलमरु

नरुद्रयाम॥ अरुद्रादीक
उरुद्रयामरुद्रयाम॥

॥ **॥ धनदेवता**
रुद्रादीय॥ सुधापाटद
अथीयक॥ ॥ धन
दीगवत्रीवीय॥ ॥

उं धनदीयत्री ४ पुर्वस
नीरुद्रनी विधमनी ४ की
पूजासकलसाधनी
त्राणी ४ मन्त्रधन सूत्रध
त्राणी सुधवत्रन धारवत्र
नी ४ सात्रात्राणी सुस्य
४ पुर्वसादीसी साहा॥ ॥

पूर्व॥ उं सां नी सात्राणी
काणी कात्राणी की कसा

कीपीथीकीवथीधननीव
धनी ४ रुमीधननीसाव
मनी ४ नी सुत्रनी ४ सात्रा
गसाणी ४ सुस्यम दानय
नी ४ दकीनसादीसीसा

हा॥ **॥ दकीन॥** उं कूं
धर्मवत्रात्र ४ वत्रमनी
त्राणी वत्रः शिवीसा
त्रग्यवीर्यगी वा मन्त्रवनी
कपीय वत्राणी नी नी
वत्राणी नी वी धनी नी व
रुवनी अत्राणी नी
स्य उद नयनी पथिमा
यो दीनी साहा॥ ॥

पकीम॥ उं कूं खत्रव

बाल वीचकन ४ वकन
 आस वयन हीमपर्वन
 ४ खवा (गु) कन न कवा (गु)
 यकीसी वकन वनी चीनः
 काकी ४ सासी खसु ४
 दानयनी उकन वनी दीः
 सी साहा ॥

॥ ३७ ॥

उकन वकन वकन वकन
 यी ४ सा वसु वसु वनी
 ४ खनी वसु वनी दानी
 सुखवा (गु) कन सावः
 वनी सां नी खसु ४
 नयनी दीग वनी गत्य ४
 साहा ॥

॥ दीगम ॥

॥ ॐ कन ४ कल सर्व
 सत्व वष कति सर्व
 एय एय कति ४ सर्वय
 उ मा ऊ सत न प न पि
 या वी प रमा ना न ह न र
 ग ४ २ व ४ २ ख ख रवा
 ही २ ४ ४ २ ॐ आ ४ क

दू त स्वा हा ४ ॥ न नी म
 वलि पू सा ॥ ४ ॥ रं त ख हा
 यक नी त ४ य का त न वा
 यु म बु ल ध ला र नी त
 व ४ ॥ न दू प ति तं का तं न
 अ ति म बु ल ति कौ न
 त क व ४ ॥ त स्वा प ति हूं
 का त य य सं ता त व ४ ॥

ॐ कूट ४ कूल सर्व स ख व भं क
नी सर्व भय भयं क ४ सर्व
यध लाध स भू त पे त पि ह्यो
प ह्यो ना न रु न २ ग २ व ध २
ख ख खा ह २ तू ज २ ॐ आ ४ क
रु त स्या हा २ ~~तानि महा कली~~
संखलं ख हायः त तो महा वला पूजा

वाक्क

ॐ यं का ते नः वायु मं द्र त धं द्रा
भं नी ल व नः त द् पू लं का ते न
अग्नि मं द्र लः ति को न त को न
तः त स्यो प ली हं का त त यः स ज्ञा
तं यु लि को प ती आ का ले जो तं
वु हं दू ता भो ज न वि धी कै ४ त
त्र भ क्का हि प ली पू ली तः ॐ कू
कं ओं जीं खं लो मीं पो तां ॥ ॥
ॐ का ल ज त द धा धि तः प चा
मृ त प व प्र दी प लु प नि का ध
वी तो त्र जो प्रे ली ता रि नः ॥ ४ ॥ ता
प वी ली न हं का त जं सू क् वि
लि या मु त भू तः सा त्र प्र स व त न

दे वा नी यं ल क क्षी त ल मू द
धू चा मु त आ क र्ष य तः
ओ क र्षे न पा द्या दि त य
स्या न वो यः अ स्त मा ती का
स्य सृ प प्र जा

पू जा ला स्या तो त सम द्वा य
सू वा हू गा था २

का धा क रे सो वी
ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥



28

17

Central India

2640 I

ASHA ARCHIVES

थनमायावतीवीय
॥ ॥ सुवाङ्मथा
वाकं ॥ ॥ उंन
मशीवजसुखाय ॥
दवासुमासर्वरुजः
मीदी१काकासुयना
ककयूननाचगन्धव
मीका१गहकाकयथ
यक१पीरुमानिवस
मीदीयानेनषूकान१
यथीनप्रहं१ककाजः
नीवीरुययामीकाम
सयनदानेसहहमः
सय१सखा००हामुः

मन्त्रगथं ॥ ॥ यमी
नृपकंतीवसंकीहवा
१यनहनयवशुवा
त्रयख्यवादनयव
१सूत्रानयष्वचयवा
दयानंगीवीमशीप्रषू
१नगप्रषूसर्वष्वचय
वका ॥ ॥ मवीसू
वसवीसुं१संगमख
१जलात्रयवापी१रु
नाधिवामावापीजान
ष्वचयंरुषूकमखव
ऊखव१नीमशुषू ॥ ॥
यनामयाय१मजका

वशुमात्रयद्वयः ४ गह
षयवः ४ वीहात्रयेत्या
वसथासमभरुमधाष
मात्रासुचकुरुजानां॥
यहनांवीरुगहवसं
गीत्रथासषुचः ४ म्यत्र
खजवीकुरुमाहायथा
षषुहासमसाभरुप
नखसीहलजोकाषुः खी
कासुयववः ४ संकीधाना
समहानवीखदियष
दीवाषु रुकात्रयावः ४
सथासमसाननिवसं
नीयव॥ ॥ यगना

सुगंधमात्रषुषवनी
दीयंवीधरुह्याः ४ गु
मदुहजंरुपीववदं
मदुवकुर्मासहवह
गदु॥ ॥ ॐ दान
वजीसहदवसंधाः ॐ
दुमवगुमदुवववी
सावका॥ ॥ ॐ
यमनेमन्यहयकीव
ॐ माने व्यापेयगीवाः
यः ४ धनाधयचरुका
धयकीचदवाभः उरु
वदकापीनासहव॥
दवासमगाहवीथना

काधवावृत्ता गृह्यगम
सम्यक्ता ४ यतीनं कनी
वदयनी स्वक स्वकाव
४ दसुहता गृह्यं दुस
वसवता सप्तम्या ॥ ॥
साती वृत्तनी ४ कृवं
दुनी नृधुवं वृत्तनी
व्यवृत्तनी नृधुवं वृत्तनी
नाधियनी वेदमना
वथस ४ रुज्जीवतु
पीवतु ०० नृधुवं कर्म ४
सकलतु ॥ ॥ ॥
कवीक समस्तानं वा

यवर्तयत्तु गृह्यगम
सम्यक्ता ४ यतीनं कनी ॥ ॥
व्याग्रावृत्तनी स्वक स्वकाव
दुन सवगर्त ४ रुम्या
मातुग्रावृत्तनी स्वक ॥ ॥
रुक्मवृत्तनी गृह्यं दुस
गृह्यं रुक्मवृत्तनी ४ रु
रुक्मवृत्तनी गृह्यं रुक्म
गृह्यं रुक्मवृत्तनी गृह्यं रुक्म
गृह्यं रुक्मवृत्तनी गृह्यं रुक्म
गृह्यं रुक्मवृत्तनी गृह्यं रुक्म
गृह्यं रुक्मवृत्तनी गृह्यं रुक्म
गृह्यं रुक्मवृत्तनी गृह्यं रुक्म

कात्री महाकात्री रथत्र
 कात्री नृकात्री ॥ ६६ ॥
 वन्दी धात्री इनी वव
 की नृदन स्वत्री की वा
 की दीपी धार्या ॥ ६७ ॥
 मा अथीन धात्री धात्र
 वृषा महा वृषा दीयत्र
 या कयात्री कयात्र मात्र
 मात्र मात्री न्या ॥ ६८ ॥
 साय सहसा ॥ ६९ ॥
 साध नृकात्री यत्र का
 कीत्री महाकात्री ॥ ७० ॥
 मर्मत्र साध ॥ ७१ ॥
 धर्म महाकात्री वरुण

वी अहमावाहया ॥ ७२ ॥
 उंकक कंधन ॥ ७३ ॥
 धनखखखवन ॥ ७४ ॥
 ययाकय ॥ ७५ ॥
 ऊर्कमानस्य सांकी धात्री
 कवर्कुरुट्टाहा ॥ ७६ ॥
 धनपूजा आययक ॥ ७७ ॥
 साइय ॥ ७८ ॥
 कडाइय ॥ ७९ ॥
 कसमाधिरु ॥ ८० ॥
 ॥ ऊवीत्र उमसी ॥ ८१ ॥
 गनगगनवी प्रासीकः
 आत्राअयदानयकी नृ
 मकस्य गकी यूसी कः

ब्रह्माहा॥ ॥ आ २४
नेकात्रकंध ४ तुमकी ४
॥ उंवजुयीककायसा
हा॥ पुयं ॥ उंवजुग
॥ धसाहा॥ पं ॥ संगध
॥ उंवजुकां वजीयसाहा
॥ गय. गव॥ उंवजु
वाससाहा॥ जं ॥ ऊंका
॥ उंसूय २ वीयहा
प्रनीयनं जावाजाय ४
दानयुनं नमस्कस्य ४
साकीससां नुसाहा॥
यं ॥ उंकात्रसां ४ दा
हासा॥ ॥ उं ॥ धर्म

२ याजुदह २ सर्ववा
प्रयसां कीर्थसां कीय
सीकब्रह्माहा॥ व ॥
गुयी॥ उंवजुधयीका
यसाहा॥ ध॥ उंवजु
लाकडींसाहा॥ ॥ धं ॥
॥ का॥ उंवजुयीसां
कायसाहा॥ पं ॥ कप
कतात्रमकी॥ उंवजु
वसकवायसाहा॥ ॥
कं ॥ उंसर्वलांकवा
यसाहा॥ ॥ ययीस॥
उंवजुसर्वकवीयसा
हा॥ नूयकंसत्र॥ उंव

जमद ईसाहा॥ यम
 कंगत्र॥ उहव २ ईरु
 टसाहा॥ सी काय॥ उं
 केक २ सर्वका कसीधि
 यसाहा॥ कंकुम॥ उंम
 द २ सर्वदद्यान साहा
 ॥ ककु कर्प २ ४ गात्र
 ४ उं वसी हव साहा॥ २
 कवट्टन॥ उंकुय २
 ईसाहा॥ श्री ध्वज॥ उं
 हीवनय दस्य साहा॥
 गात्रकंगत्र॥ उं सर्ववत्त
 यदस्य साहा॥ मंगल
 नंगत्र॥ उं समयगात्रय

साहा॥ अगु वसी॥ उं सर्व
 संज्ञागसाधयकीयुष्
 कृन्तुं रुट् साहा॥ गुं गु
 उंकनीधनीसर्वसीकी
 कृन्तुं साहा॥ वककी
 व॥ उं सर्वत्रागयसम
 नायसाहा॥ सावीडिद
 क॥ उं वककीहनायसा
 हा॥ हव४ वीहव अ६
 मवयसी॥ उं वकम
 धूनीयसाहा॥ कली सा
 खव४ वइवाक४॥ ॥
 उं सर्वकीन अग्रसा
 हा॥ व४। की ४४ व४।

साव॥ स्याज ४ यवा॥
 उ० सर्वनीववमसाहा॥
 संध ४ वावी ४ सहाकन
 ॥ उ० सर्वसंकनसाहा॥
 म० यीयी ४ स० ४॥ ॥
 उ० सर्ववाधियसमनाय
 साहा॥ ४ ४ ह ४ ४ स०
 ०० म० ४॥ उ० सर्वनवदि
 साहा॥ दु० यु० दु० ॥ थन
 वरीवीय॥ उ० द० द० वा
 दववृधक ४ वीवृणक
 व० स० व० व० न० ४ व० क० नु०
 कामनार्थयुत्रय २ दीभा
 सलीकवंदीवा ४ मागंया

वार्थसाककं म्रथाव० सा
 स० स० सर्ववा स० यदही
 न० साहा॥ ॥ वहुम
 हावाजाया॥ उ० अ० क० म्र
 दीयम० म० म० म० म० म०
 केनै ४ म० म० म० म० म०
 पुन० ह० म० म० म० म० म०
 नाथं ४ म० म० म० म० म०
 स० ४ वी० म० म० म० म०
 म० म० म० म० म० म०
 म० म० म० म० म० म०
 हा॥ ॥ नगत्रया
 ॥ म० म० म० म० म० म०
 म० म० म० म० म० म०

ऊवा ऊं नुवी कमसाह
 वम्रखं छं दसाधिका
 मनार्थं नरावाधियः
 कीवा ऊं नुवी कमसाह
 सुकुं सर्वगधवीवीय
 नी. सयनसह वक्रं
 साहा॥ **वा ऊं या न॥** उ
 दानयनी वक्रं मानस्य
 ऊं नुवी कमसाह
 मनार्थं नरावाधियः
 या नुवी कमसाह
 शाद उययकां नमहा
 सा ऊं नुवी कमसाह
 दया स्वकी स्वाहा॥ ॥

॥ ऊं नुवी कमसाह ॥
 शावजी वार्थसासुनव
 ऊं नुवी कमसाह
 यासिद्धि मनुसिद्धि वा
 कसिद्धि कामनाथं. ऊ
 थासासु नुवी कमसाह
 र्थं नुवी कमसाह
 नां नमवी सयनसह वक्रं
 कवाकं शुवीकं नमर्वस्य
 सुकवी वनी स्वकी स्वा
 हा॥ **॥ मूला वार्थ**
यान॥ ॥ थनय
हनि॥ मूला ल ॥ म
य ॥ मूला यान॥ य

॥ यथा॥ यथा वा त्रयपुङ्गा॥

॥ वृत्तवती॥ त्रहस्यम

॥ सा नक्षत्रा नक्षत्रा॥

॥ वृत्तपुङ्गा ४ दक्षिणा ४ दक्षिणा

॥ मायवती ॥ कथमा नक्षत्रा

॥ क॥ अथा नक्षत्रा दक्षिणा॥

॥ वीमलवती ॥ धनवती ही

॥ य॥ ॥ इती ॥ ॥

॥ नक्षत्रपुर्ववत् अग्निदक्षिणा

॥ अथा वीमलवती ॥ समाद

॥ वंशमक्षुला धियवती ॥

॥ संवीवा वंश ४ हननसः

॥ त्वभारुता नक्षत्रा नक्षत्रा

॥ अथ हननवत् इति ॥ ॥

॥ मन्वसर्वकमी कर्मवृत्ता

॥ नक्षत्रा इती सुमन्वती

॥ मन्व॥ ॥ अनेनः

॥ सुखीना वक्ति ४ हननव

॥ की पुर्वावत् ॥ सावता

॥ हीती नक्षत्रा ४ सुखीना

॥ मन्ववती ॥ पुर्व ४ यत्र

॥ मित्यत्र सुखी ४ सुखीना

॥ नीतीना पुर्वी ४ वृत्तम

॥ कर्महन्वत् ४ वीमलवती

॥ यमहा वृत्तकर्मदवः

॥ प्रवेव ४ वन्दुसूर्यरु

॥ वरुही ॥ पृथिवी गंध

॥ प्रवेव ४ कर्मावकन

यत्तथाधर्मोऽत्राज्ञा
नागाश्चगधवासुत्र
कीनवाऽनायकीना
स्तीतादेवाश्चाग्निस्तु
नीवासीनऽमहावा
ज्जुथीनायवऽनीमा
न समकीनऽनीमा
नववीवाश्चशुधावा
यगाश्चयः मावीवीवा
कधातुमासहाधातु
नीवासीनवदुद्विष
स्तीतासत्वास्तुनाय
वकीधातुवृहाजन

सत्यनाकाचवनागु
मरुनादयऽमदीना
रुमोस्तुनायववीना
योगीयात्ररुसर्वक
र्मनीनी रुऽवाचय
याकनास्यदाधर्मस
वान्नायवऽइरुया
गताभयः॥ इजंगुमा
याश्चसायुहाकनीनी
वासीनऽमूहीमुखी
स्तुनायव जंवसाध
युमीमनाः॥ दुगर्हमी
श्चयानाथश्चायायाः

पूनावय. संवृक्षासा
वका. (धैव. खर्जवी
कनी. नृषी. नं. प. क. न
क. तु. ग. वा. ॥ द. वा. तु. न
व. मू. रु. का. ४. पी. न. ह. रु.
ना. म. मा. ग. का. नी. ॥ ऊ.
ऊ. गु. मा. रु. ॥ उ. आ. रु. रु.
ह. व. रु. ना. दा. न. य. नी. अ.
मू. क. रु. ॥ ऊ. था. रि. न.
खी. रु. य. न. २. ग. व. य.
रु. रु. नि. पु. नी. रु. खा.
रु. ॥ ॥ ध. न. ला.
प. न. या. य. ॥